प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 30.1.68

ओमशांति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चों को पहले2 तो बाप का परिचय मिला है। छोटा बच्चा पैदा होता है तो पहले2 उनको मां–बाप का परिचय मिलता है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। जिनको रचता बाप का परिचय मिला है। यह भी बच्चे जानते हैं उंच ते उंच बाप ही है। उनकी ही महिमा बतानी है। महिमा गाते भी हैं शिवाय नमः, ब्रह्मायनमः, विष्णुवाय नमः शोभता नहीं है। शिवाय नमः शोभता है। ब्रह्मा–विष्णु के लिए फिर कहेंगे ब्रह्मा देवताय नमः, विष्णु देवताय नमः। देवता से अक्षर शोभता है। देवता कहना पड़े। उंच ते उंच है भगवान। प्रदर्शनी आदि में जब कोई आते हैं तो पहले2 बाप की महिमा जरूर बतानी है। वह सुप्रीम वा परम बाप है। बच्चे भूल जाते हैं। उस समय याद नहीं पड़ता है। बाप ही महिमा कैसे सुनावें? पहले तो यह समझाना वह सुप्रीम बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। तीनों को याद करना पड़े। यूं याद तो शिवबाबा को ही करना है तीनों रूपों में। यह तो पक्का करना पड़े। पहले2 बाप की महिमा करनी है। जरूर तुम जानते हो तब तो महिमा करते हो। उंच ते उंच भगवान को फिर ठिक्कर–भित्तर में ठोंक देते हैं। मनुष्य में भी नहीं कह सकते। सदैव तो मनुष्य तन में रहते नहीं हैं। वह तो जरूर लोन लेते हैं। कोई भी आत्मा किसके शरीर का आधार नहीं लेती है। यह खुद कहते हैं मैं इनका आधार लेता हूं। तो पहले2 मुख्य बात पक्की करानी है। बाप है ही ट्रुथ। वही सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं। नर से नारायण ट्रुथ बाप ही बनाते हैं। इन ल0ना0 का राज्य था ना। वह बने कैसे? कब बनाया?कब कथा सुनाई?कब राजयोग सिखाया यह तुम अभी समझते हो। और सभी .....होते हैं मनुष्य के मनुष्य साथ। ऐसा होता नहीं जो मनुष्य का योग निराकार साथ हो। वह भी समझ से हो। आजकल तो भल शिव साथ योग लगाते हैं, पूजा करते हैं ;परंतु उनको जानते कोई भी नहीं हैं। समझते कुछ भी नहीं। यह भी समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर साकारी सृष्टि पर ही होगा। मूंझे हुए हैं। समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा तो पहले2 सतयुग में होना चाहिए। अगर सतयुग में प्रजापिता ब्रह्मा हो तो फिर सूक्ष्मवतन क्यों दिखया है। अर्थ ही नहीं समझते। वह है कर्मबंधन में। वह है कर्मातीत। यह ज्ञान कोई में नहीं है। ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप है। वह आकर तुमको ज्ञान देवे तब तुम दूसरों को सुनाओ। ज्ञान है ही नहीं तो दूसरों को सुनावेंगे कैसे? बाप का परिचय देना है। है बहुत सहज। अल्फ पर ही समझाना है। यह सभी आत्माओं का बेहद का बाप है। किसको परिचय देने में किसको तकलीफ नहीं है। बहुत सिम्पल है ;परंतु निश्चय नहीं तो किसको समझाय नहीं सकते हैं। जैसे अज्ञान मनुष्य हैं वैसे यह भी अज्ञानियों के लाइन में आते हैं। ज्ञान नहीं देते तो गोया अज्ञानी हैं। ज्ञान होगा ही देहीअभिमानी में। ज्ञान नहीं तो भक्त है वा देहाभिमान है। हम आत्मा हैं, हमारा बाप परमपिता परमात्मा है, वही टीचर ,गुरू है। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो है ना। सूक्ष्मवतन में कहां से आया? बाप ने प्रजापिता ब्रह्मा का भी आक्युपेशन बताया है। विष्णु का भी आक्युपेशन बताया है। शंकर के लिए तो बताया है उनका पार्ट ही नहीं है। उन्होंने तो शिव के साथ शंकर को मिलाकर एक ही कर दिया है। समझते हैं शंकर विनाश करते हैं। यह भी बात बनाय दी है। बाकी ऐसे है नहीं कि शंकर के आंख खोलने से सृष्टि भस्म हो जावेगी। यह तो बम्स है। नैचुरल कैलेमिटीज होती है। विनाश करना तो बहुत छी2 बात है। फिर शंकर जैसे आसुरी सम्प्रदाय हो जाये। देवतायें फिर आसुरी सम्प्रदाय कैसे हो सकते?फिर शिवशंकर महादेव कह देते हैं। यह त्रिमूर्ति आदि के चित्र यथार्थ रीति हैं नहीं। यह तो सब अर्थ रहित चित्र हैं। विष्णु भी सूक्ष्मवतन में जेवर आदि वाला कैसे हो सकता है? यह भी ठीक नहीं है। तुम कहेंगे यह सभी भक्तिमार्ग के शास्त्र चित्र आदि हैं। वहां तो ऐसे कोई बात हो न सके। प्रजापिता ब्रह्मा भी देहधारी है। कितने ढेर बच्चे हैं। तो यह चित्र आदि सब भक्तिमार्ग के पूजा आदि लिए है। प्रजापिता ब्रह्मा वहां कैसे हो सकता है? बाप ने समझाया है यह व्यक्त ,वह अव्यक्त। जब अव्यक्त बनते हैं

ते सूक्ष्मवतन फरिश्ता हो जाते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन है तो सही ना। सूक्ष्मवतन में जाते हैं ना। तो यह चित्र आदि कोई यथार्थ रीति है नहीं। बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा जो मनुष्य था वही फिर फरिश्ता बनता है। और फिर राजाई का भी इसमें दिखाया है। फिर यह राज्य करेंगे। सूक्ष्मवतन के यह चित्र न हों तो भी समझने में मुश्किलात हो जाये। वास्तव में विष्णु का चतुर्भुज रूप भी नहीं है। वह सभी हैं भक्तिमार्ग के। यहां बाप समझाते हैं पतित से पावन बनना है। सूक्ष्मवतन की बात ही नहीं ठहरती। आत्मा को प्योर बनना है। प्योर बनकर चले जावेंगे अपने धाम। आत्माएं तो निराकारी दुनियां में रहती हैं। साकारी हैं यहां। बाकी सूक्ष्मवतन की कोई मुख्य कहानी है नहीं। सूक्ष्वतन का राज़ भी अभी बाप समझाते हैं। मूलवतन, फिर सूक्ष्मवतन फिर है स्थूलवतन। तो पहले2 जब कोई भी आते हैं तो बाप का परिचय देना है। वह बाप है। भक्तिमार्ग में भी बाबा बाबा, हे भगवान कहते हैं। सिर्फ जानते नहीं हैं। हमेशा कहते हैं शिव परमात्माय नमः। शिव देवता कब नहीं कहेंगे...। ब्रह्मा देवताय नमः कहेंगे। शिव को परमात्मा ही कहते हैं। परमपिता परमात्मा भी कहते हैं। फिर उनको सर्वव्यापी थोड़े ही कहा जाता है। पतितों को पावन बनाने का कर्तव्य करना है तो क्या भित्तर–ठिक्कर में जाय करेंगे। इसको घोर अंधियारा कहा जाता है। यह भी ड्रामा में नूंध है। मनुष्य खुद पत्थर बुद्धि हो तो भगवान को भी ठिक्कर–भित्तर में ले गए हैं। कुछ भी समझते नहीं। बाप आकर समझाते हैं यदा यदा हि.....भारत की ही बात है। शास्त्रों में तो संस्कृत में लिख दिया है। बाप आकर इनका अर्थ समझाते हैं। यदा यदा..... किसकी ग्लानी? वह लोग श्लोक सुनाकर फिर क्या अर्थ सुनाते हैं यह भी तुम बच्चों को देखना चाहिए। वहां जाकर बोलना चाहिए हम इनका अर्थ नहीं समझते हैं। फट से सुनावेंगे। ऐसे थोड़े ही समझेंगे यह ब्रह्माकुमारियां हैं। करके सफेद ड्रेस है ;परंतु तुम्हारे पर कोई ब्रह्माकुमारी का छापा थोड़े ही है। पुरुष भी कोई जाय पूछे वह तो झट सुनावेंगे। वह लोग क्या अर्थ करते हैं वह मालूम पड़ने से फिर बाबा इसका अर्थ भी समझावेंगे। बाबा को समाचार देना चाहिए ;परंतु ऐसा कोई बच्चा है नहीं। यह चिनमयानन्द आदि जाते हैं तो सभी तरफ ना। कहां भी जाय सुना आना चाहिए। खुद पूछ भी सकते हैं। इनका अर्थ तो समझा ही नहीं। देखो वह क्या सुनाते हैं। बाकी इतने सब चित्र तो डिटेल में समझाने की है। कितना अथाह ज्ञान सुनाते हैं। सागर करके मस बनाओ तभी भी अंत नहीं और फिर सेकेंड की भी बात सुनाई। सिर्फ बाप का परिचय देना है। वही पतित–पावन बेहद का बाप है। वह बाप है स्वर्ग का रचता। हम उनके बच्चे ब्रदर्स हैं। तो हमको भी जरूर स्वर्ग का (रज्य)राज्य होना चाहिए ना ; परंतु सभी को तो मिल न सके। बाप आते ही हैं भारत में। भारतवासी ही स्वर्गवासी बनते हैं। दूसरे तो आते ही हैं पीछे। यह है बहुत सहज ;परंतु समझते नहीं हैं। बाबा को वंडर लगता है। एक दिन गणिकायें, भीलनियां भी आकर समझ जावेंगे और यहां के रह जावेंगे। पिछाड़ी में .....तीखे हो जावेंगे। यह गणिकायें, भीलनियांयें आदि सब निकलेंगे। हो सकता है गवर्मेंट इन्हों के अड्डे निकलवायें इकट्ठा कर दे। वहां भी कोई अच्छी जाय सर्विस कर सकते हैं। बहुतों को तो लज्जा आती है। देहाभिमान तो बहुत है ना। बाबा तो कहते रहते हैं वैश्याओं को भी उठाना है। यह है ही वैश्यालय। भारत का नाम भी इन्हों ने ही गिराया है। इसमें मुख्य चाहिए योगबल। यह बिल्कुल ही पतित है। पावन होने लिए याद की यात्रा चाहिए। अभी वह याद का बल बहुत ही कम है। वैश्याओं को भी आत्मा समझ उठाओ। फिर घृणा नहीं आवेगा। आत्माएं तो सब गिरी हुई हैं ; परंतु उनके लिए घृणा आती है। यह है नम्बरवन पतित। सो फिर नम्बरवन पावन बनना है। करके यह जन्म अच्छा था ;परंतु है तो नम्बरवन पतित ना। तो इन गणिकाओं को भी उठाना है। तब ही तुम्हारा नाम बाला होगा। अपन को आत्मा निश्चय कर बोलेंगे कि हम भाई को समझाते हैं। तो घृणा नहीं आवेगा ;परंतु वह अवस्था कुछ है नहीं। अच्छे2 बच्चे

योग में कच्चे हैं। ज्ञान में तीखे हैं। कोई का तो न योग है, न ज्ञान है। जिनमें ज्ञान है वह भी इस योग में कमजोर है। यही डिफिकल्ट सब्जेक्ट है। इनमें जब पास हो। गणिकाओं का भी उद्धार तो करना है ना। अच्छी2 माता अनुभवी हो जो जाकर समझावे। कन्याओं को तो अनुभव नहीं है। माता समझाय सकेंगी हम भी ऐसे थे। अब बाप कहते हैं पवित्र बनो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। यह दुनियां ही शिवालय बन जावेगी। सतयुग को शिवालय कहा जाता है। वहां अथाह सुख है। ऐसे नही कि वैश्यायें सुधर नहीं सकतीं हैं। यह भी आवेंगे। तुम थोड़ा उठाते हो। फिर हिम्मत छोड़ देते हो। वैश्याओं के हेड को निमंत्रण देना चाहिए कि सभी को ले आओ। यह भी शिवालय में 21जन्म उंच पद पाय सकती है। यहां तो कितना दुःख है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। इन्हों के भी एसोसियेशन होते हैं। उन्हों के बड़ों को समझाना चाहिए। हम खास वैश्याओं के लिए रखते हैं। उन्हों के एसोसियेशन तो बहुत हैं। इनमें भी नम्बरवार होते हैं। कोई तो बड़े साहुकार, अच्छे मकान होते हैं। तुमको गवर्मेंट से सब पता पड़ सकता है। उन्हों को भी तुम समझाओ बाप कहते हैं अब प्रतिज्ञा करो पवित्र बनने की। तुमको रोटी मिल जावेगी। किसको रोटी पहुंचाना कोई बड़ी बात नहीं। 5/7 निकलेंगे ;परंतु देह अभिमान को तोड़ना है। ऐसे पतित को पावन बनाने लिए योगबल की तलवार भी तीखी चाहिए। उसमें शायद अभी देरी है। जैसे गुल्जार है, स्वदेश है, मोहनी है ,अच्छे समझाने वाले हैं। परंतु इतना उमंग आता थोड़े ही है। वैश्याओं के लिए गवर्मेंट से बात करनी चाहिए। समझाने वालों में भी नम्बरवार हैं। नम्बरवार भी सेंटर्स पर भी रहते हैं। बाप तो जानते हैं ना। सब एकरस नहीं हो सकते। सर्विस पर भी जो जाते हैं उनमें भी रात–दिन का फर्क है। पहले जब कोई को समझाते हो तो बाप का परिचय देना है। बाप की महिमा करो। इतने गुण सिवाय बाप के और कोई में नहीं है। वही गुणवान बनाते हैं। बाप ही सतयुग की स्थापना करते हैं। अभी यह है संगमयुग। जबकि तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो। तुम आत्माओं को बैठ समझाते हो यह तो समझते हो आत्मा का यह शरीर है। कहां तक समझते हैं वह पहचार सिकल में पड़ेगी। कोई मूढ़ होते हैं तो सिकल से ही पता पड़ जाता है। उनके सिकल ही बदल जाते हैं। आत्मा समझ बैठेंगे तो सिकल भी अच्छे रहेंगे। यह भी प्रैक्टिस होती है। घर–गृहस्थ में रहने वाले इतना उछल नहीं सकते हैं ;क्योंकि गोरखधंधा लगा पड़ा है। पूरा जब अभ्यास करे तो चलते–फिरते ,उठते–बैठते पक्की हो जावे। याद से ही तुम पावन बनते हो। आत्मा जितना योग में रहती है उतना ही उंच बनती है। सतयुग में तुम सतोप्रधान थे तो बहुत खुशी थी। फिर दो कला कम होती है तो खुशी भी कम। कम होते2 अभी कोई खुशी नहीं रही है। अब फिर चढ़ना भी ऐसे ही है। जितना नजदीक आते जावेंगे खुशी बढ़ती जावेगी। पिछाड़ी को तुम बहुत खुशी में रहेंगे। हंसते–बहलते रहेंगे। बेहद का बाप मिला है। बाकी और क्या चाहिए?बाबा पर तो कुर्बान होना चाहिए। साहुकार कोई मुश्किल निकलते हैं। गरीबों को ही मिलता है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। धीरे2 वृद्धि को पाते रहेंगे। कोटों में कोउ ही विजयमाला के दाना बनते हैं। बाकी प्रजा तो बननी ही है नम्बरवार। कितने ढेर प्रजा हो जावेंगे। साहुकार गरीब सभी होंगे। यह पूरी राजधानी स्थापन हो रही है। बाकी सभी अपने2 सेक्शन में चले जावेंगे। तो बाप समझाते हैं बच्चों को दैवी गुण धारण करनी है। कोई के तो आसुरी से भी आसुरी गुण है। अज्ञान .... में भी बाबा को देखा हुआ है। बहुत प्यार में, शांति में सारा घर चलता है। 5भू बड़ा तंग करते हैं। लोभ का भी भूत होता है। कोई चीज न मिले तो बात मत पूछो। दैवी गुणों में तो बड़ा कायदे सिरे खान–पान चलता है। उनको कब आश रहेगी क्या किचन में जाय यह बनाउं?यह खाउं। यह आशें अभी यहां हैं। बाबा को ...वानप्रस्थियों के आश्रम देखे हुए हैं। बड़े शांति से रहते हैं। यहां तो यह सब बेहद की बातें बाप समझाते रहते हैं। वैश्यायें, गणिकायें भी ऐसे2 आवेंगे जो तुम से भी तीखे हो जावेंगे। बड़ी फर्स्ट क्लास गीत गाने वाली ,भाषण करने लग पड़ेगी। ऐसे फर्स्ट क्लास गीत बनावेंगे जो सुनते ही खुशी का पारा चढ़ जावेगा।

ऐसे गिरे हुए को तुम समझाय उठाओ तब तुम्हारा नाम भी बहुत उंचा होगा। कहेंगे यह तो वैश्याओं को भी इतना उंच बनाते हैं। खुद ही कहेंगे हम तो शूद्र थे। अभी ब्राह्मण बने हैं फिर हम सो देवता, क्षत्री, बनेंगे। यहां के पुराने2 बच्चे इतना नहीं समझाय सकेंगे जितना वह समझाय सकेंगी। बाबा हरेक के चलन से समझ तो सकते हैं ना। कुछ उन्नति को पावेंगे वा नहीं। खुद भी समझ सकते हैं। हम इससे जास्ती चढ़ नहीं सकेंगे। पिछाड़ी में आने वाले इनसे जास्ती चढ़ जावेंगे। वैश्यायें भी पुरुषार्थ कर माला का दाना बन सकती हैं ;क्योंकि बहुत दुःखी हैं ना। वह जोर से पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगी। यहां वालों से तीखे चले जावेंगे। आगे चल तुम यह सब देखना। अभी भी देखते हो नई2 बच्चियां कितनी उछलती हैं सर्विस में। देहली से कमांडर आया, कितना सबको समझाते हैं ,खुशी में रहते हैं। बहुत फर्क पड़ जाता है। बाबा तो कहते हैं ट्रेन में भी तुम समझाते रहो। चित्र साथ में ले लो। अभी तो ल0ना0 के चित्र भी बन गए हैं। अजन बाबा के पास आई नहीं है। आवे तो बाबा लगा देवें। इन चित्रों पर समझाना बहुत सहज है। यह है एक ऑब्जेक्ट। हम फिर से यह बन रहे हैं। अभी हम ब्राह्मण है फिर सो हम देवता बन रहे हैं। यह भी समझाय वहीं सकेंगे जो बन रहे हैं। जिनमें कुछ अकल ही नहीं वह कैसे समझाय सकेंगे। इनमें लिखते भी बड़ी फर्स्ट क्लास है। कृष्ण के भक्तों को, ल. ना. के भक्तों को इन चित्रों पर जाकर समझाओ। है बहुत सहज। इसलिए बाबा कहते थे मुख्य चित्रों का कलेंडर भी बन जाये तो बहुत अच्छा है। नम्बरवन फर्स्टक्लास है ल.ना. के मंदिर में जाय सर्विस करना। चित्र साथ में ले जाये वहां बैठना चाहिए। हमको बाप द्वारा यह वर्सा मिल रहा है। यह सतयुग में मालिक थे ना। अभी तो कलियुग है। फिर सतयुग होगा। साथ में झाड़–त्रिमूर्ति भी हो। दुकान निकाल बैठ जाना चाहिए। ढेर मनुष्य आकर तुम्हारा सुनते रहेंगे। तुम कितने चित्र वहां बेच सकते हो। तुम्हारा सारा खर्चा इन चित्रों से निकल आवे। चित्रों से फायदा तो होता है ना। तुम्हारे इस बैज में भी बहुत फायदा है। फुरी2 तालाब हो सकता है। सारा दिन बुद्धि चलती रहती है यह करना चहिए , यक(यह) करना चाहिए। करने वाले बहुत कम हैं। कराने की डायरैक्शन तो बाबा बहुत देते रहते हैं। तुम ल0ना0 के मंदिर में जाय सर्विस करो। कब कोई तुमको मना नहीं करेंगे। मंदिर के बाहर दुकान निकाल बैठो। बोलो बेहद के बाप से आकर यह वर्सा लो। तुम एक को समझावेंगे तो एक/दो को देख ढेर इकट्ठे हो जावेंगे। बाबा को बम्बई में देखा हुआ है। बाबा ने देखा पहले एक को बैठ समझाता था। फिर दूसरे दिन देखा 10/20 हो गए। थोड़े ही दिनों में उनका बड़ा सतसंग बन गया। तुम्हारा ज्ञान तो बहुत मीठा है। समझाने वाले भी बड़े अच्छे चाहिए। कोई न कोई निकलेंगे जरूर। सुबह और शाम को यह सर्विस करने लग जाओ। दिन में तो अपनी नौकरी आदि करनी ही है। सर्विस बहुत है। तुम्हारे बैजेज तो नम्बरवन चीज़ है। शॉर्ट बहुत अच्छा समझाय सकते हैं। बाकी जिनको अकल ही नहीं समझाने का वह बैज पहन कर क्या करेंगे? समझाय सकते हैं तो लगाना चाहिए। भल कोई हंसी करे हर्जा ही क्या है? युक्ति से किसी दुकान पर चले जाओ। फिर पूछेंगे यह क्या है? बैठ समझाओ दुकान वाले ही तुम पर कुर्बान हो जावेंगे। युक्तियां तो सर्विस करने की बहुत ही ढेर हैं। जो समझ सकते हैं वहीं बाप के डायरैक्शन पर चलेंगे। नशा भी रहेगा ना। हम सारा दिन यह सर्विस करते हैं। एक मंदिर में दो/तीन भी बैठ सर्विस कर सकते हैं। अभी पुरुषार्थ न करेंगे ,याद की यात्रा में न रहेंगे तो फिर टू लेट हो जावेंगे। कुछ भी बुद्धि में नहीं बैठता है तो गोया आसुरी बुद्धि हुई ना। बुद्धि पलटती ही नहीं है। जिनमें भूत होते हैं वह सर्विस बदली डिससर्विस की(ही) करते रहते हैं। फिर समझाया जाता है तुम्हारा चलन जो है इससे तुम और ही गिर जावेंगे। बाप सुनावेंगे भी ब्रह्मा द्वारा ना। ब्रह्मा बिगर किससे सुनावेंगे? फिर मुरली भी बंद की जाती है। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते। ओम।

शिवबाबा याद है क्या?